بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَ نُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصار اللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

24

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 06 जून, 2025 , स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(एहसान महीने की तिथि 06 ,1404 हश)

हमारी ईद महज़ दिखावे की ईद न हो, बल्कि हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल-इबाद की अदायगी की ईद हो।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 06.06.2026
محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद सूरः हज की आयत 35 से आयत 39 तक तिलावत और अनुवाद के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया: इस मज़मून में हमें यह समझाया गया है कि क़ुर्बानी का मतलब सिर्फ़ यह नहीं कि तुम दूसरों की क़ुर्बानी लो, जैसे ईद-उल-अज़्हा पर जानवरों की क़ुर्बानी ली जाती है बल्कि तुम्हें यह बताने के लिए कि आला (उत्तम) चीज़ के लिए अदना (हल्की) चीज़ क़ुर्बान की जाती है, पस तुम्हें भी अपने पैदा करने वाले ख़ुदा के लिए क़ुर्बानी देने के लिए तैयार रहना चाहिए। अल्लाह तुमसे सिर्फ़ तक़्वा पर चलने की उम्मीद रखता है। अल्लाह तआला तुमसे सिर्फ़ यह चाहता है कि उसकी ख़शियत और ख़ौफ़ तुम्हारे दिल में रहे और तुम हर वक़्त इस बात के लिए कोशिश करते रहो कि मैं किस तरह उसके अहकामात पर अमल करके उसकी रज़ा हासिल करूँ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आजकल पाकिस्तान में जमाअत अहमदिया को क़ुर्बानी से रोका जाता है और गुज़श्ता कई सालों से यह हो रहा है कि हमें क़ुर्बानी से रोका जाता है। तो असल चीज़ तो तक़्वा है — यानी अगर क़ुर्बानी नहीं भी करने दी जाती तो अल्लाह तआला हमारी नीयतों को जानता है कि हम किस नीयत से क़ुर्बानी करना चाहते हैं। अगर हमारी नीयत तक़्वा पर चलते हुए क़ुर्बानी करने की

थी, तो क़ुर्बानी न करने के बावजूद अल्लाह तआला हमारी क़ुर्बानियाँ क़बूल करने वाला है। जो लोग दिखावे की क़ुर्बानियाँ करते हैं, यह तो तक़्वा से ख़ाली क़ुर्बानी है। क्या ये लोग अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल कर रहे हैं? क्या अल्लाह तआला ने यह हुक्म दिया है कि लोगों के हुक़ूक़ को पामाल (अधिकारों का हनन) करो? क्या अल्लाह तआला यह कहता है कि लोगों पर ज़ुल्म करो या उन्हें अल्लाह की इबादत करने से रोको? अल्लाह तआला ने तो यह अहकाम नहीं दिए।

अल्लाह तआला ने तो हर उस शख़्स को जिसने لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ पढ़ा, यह कह दिया है कि वह मुसलमान है। लेकिन यह लोग जो कुछ आजकल अहमदियों के साथ पाकिस्तान में कर रहे हैं, यह ख़ुदा तआला से दूर ले जाने वाली बातें हैं। यह ज़ुल्म है। लेकिन बहरहाल हमारा फ़र्ज़ यह है कि हम यह बात समझें कि यह क़ुर्बानियाँ अल्लाह तआला का क़ुर्ब (निकटता) दिलाने के लिए हैं – इसलिए अगर हम क़ुर्बानी नहीं भी कर सकेंगे तो अल्लाह तआला फिर भी इसे क़बूल फ़रमाएगा, क्योंकि उसने यही फ़रमाया है कि मुझ तक तुम्हारी क़ुर्बानियों का गोश्त या ख़ून नहीं पहुँचता, बल्कि तुम्हारा तक़्वा मुझ तक पहुँचता है।

फ़रमाया: अल्लाह तआला ने वाज़िह तौर पर फ़रमाया है कि तुम्हारी पैदाइश का मक़सद हुक़ूक़ुल्लाह की अदायगी और उसकी बंदगी है। इसमें सबसे पहली चीज़ नमाज़ बा-जमाअत का क़याम है। आजकल जब हर तरफ़ से सख़्तियाँ की जा रही हैं, तो हमारा फ़र्ज़ है कि हम पहले से बढ़कर अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करें। हमें चाहिए कि अल्लाह तआला के हुज़ूर रो-रोकर दुआएँ माँगें – जैसे एक ज़बह किए जाने वाला जानवर तड़पता है, उसी तरह हमें भी अपने अमल ज़ाहिर करने चाहिए। पाकिस्तान में रहने वाले अहमदियों को ख़ास तौर पर इस तरफ़ तवज्जुह देनी चाहिए। नमाज़ें हमने अपने गले से उतारने के लिए नहीं पढ़नी, बल्कि इनका हक़ अदा करने के लिए पढ़नी हैं। बा-जमाअत और सँवार-सँवारकर नमाज़ अदा करनी चाहिए।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: आज यह अहद करें कि हमने अपनी इबादात के मेयार बुलंद करने हैं। पाकिस्तान में शायद हमें ईद की नमाज़ पढ़ने की इजाज़त नहीं मिलेगी। इंतिज़ामिया की तरफ़ से पाबंदियाँ लगा दी जाएँगी या लगा दी गई हैं मगर हमने इसकी परवाह नहीं करनी और अपने दिलों में मायूसी को जगह नहीं देनी। बेशक अपने घरों में ईद की नमाज़ पढ़ लें। मगर यह अहद करें कि हमने अल्लाह तआला की इबादत और उसके बंदों के हुक़ूक़ की अदायगी की कोशिश करनी है। नमाज़ का हक़ अदा करने के लिए हमें पूरी तरह कोशिश करनी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: इबादत के दो हिस्से हैं, एक यह कि इंसान अल्लाह तआला से डरे जो उससे डरने का हक़ है। दूसरा हिस्सा यह है कि इंसान ख़ुदा तआला से मुहब्बत करे जो उससे मुहब्बत का हक़ है।

फ़रमाया: इस्लाम ने इन दोनों हुक्मों को पूरा करने के लिए एक सूरत नमाज़ की रखी है, जिसमें ख़ुदा के ख़ौफ़ का पहलू रखा है। दूसरा मुहब्बत के पहलू के इज़हार के लिए हज रखा है। दुश्मन की कोशिश यही है कि अहमदी अपने ईमान से दूर हो जाएँ, मगर इसमें वो कभी कामयाब नहीं हो सकते। जो मज़बूत अहमदी है, जिसके दिल में ईमान है, वो कभी इनके ज़ुल्मों से पीछे नहीं हट सकता। हमें कोशिश यह करनी चाहिए कि हम इन दिनों में अपनी इबादात के मेयारों को आगे बढ़ाएँ।

बहुत-से पाकिस्तानी अहमदी ऐसे हैं जिनके रिश्तेदार बाहर मुल्कों में हैं। अगर वो पाकिस्तान में क़ुर्बानी नहीं कर सकते तो बाहर अपने रिश्तेदारों के ज़रिए से क़ुर्बानियाँ करवा सकते हैं। अफ़्रीक़ा के ग़रीब मुल्कों में क़ुर्बानी करवा सकते हैं। अगर क़ुर्बानियों से रोका जाता है तो अल्लाह तआला ने क़ुर्बानी करने के दूसरे ज़राए भी दिए हुए हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि ग़रीबों का ख़याल रखो — खाना खिलाना है, उनकी ज़रूरतों का ख़याल रखना है। अल्लाह तआला ने हज के साथ क़ुर्बानी रखी है, मगर क़ुर्बानी के और भी मवाक़िअ हैं, उनसे फ़ायदा उठाना चाहिए। फिर वक़्त की और माल की भी क़ुर्बानी है, उसके लिए भी भरपूर कोशिश करें। फिर जिन बातों से अल्लाह तआला ने रोका है उनसे रुकना भी एक क़ुर्बानी है।

फ़रमाया: फिर हुक़ूक़ुल-इबाद (बन्दों के अधिकार) भी निहायत अहम हैं। इनमें मियाँ-बीवी, भाई-बहन, अज़ीज़ रिश्तेदार सबके हुक़ूक़ आ जाते हैं। पड़ोसियों और मुहल्लेदारों के भी हुक़ूक़ हैं इन सबका ख़याल रखना चाहिए। इस्लाम ने तो दुश्मन के भी हुक़ूक़ रखे हुए हैं। ग़ैर-मुस्लिमों के भी हुक़ूक़ रखे गए हैं। अगर हम हुक़ूक़ुल-इबाद की अदायगी मुकम्मल तौर पर करें तो हुक़ूक़ुल-इबाद कभी-कभी इबादात का रंग भी इख़्तियार कर लेते हैं। इसलिए फिर इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि हमें इबादात से रोका जाता है। अल्लाह तआला सिर्फ़ इस बात से राज़ी नहीं होता कि तुमने बकरे की क़ुर्बानी कर दी, बल्कि अल्लाह तआला हुक़ूक़ुल-इबाद की अदायगी से राज़ी होता है।

हदीस में आया है कि तुममें से कोई शख़्स मोमिन नहीं हो सकता यहाँ तक कि वो अपने भाई के लिए भी वही पसंद न करे जो अपने लिए करता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल

नहीं हो सकते जब तक ईमान न ले आओ, और तुम उस वक़्त तक ईमान नहीं ला सकते जब तक एक दूसरे से मुहब्बत न करो।

अतः अहमदियों को आपस में तमाम रंजिशें ख़त्म करनी चाहिए ताकि न सिर्फ़ उख़रवी जन्नतों के हम वारिस बन सकें, बल्कि इस दुनिया में भी जन्नत-नज़ीर मुआशरा (जन्नत के समान समाज) बना सकें। आजकल के हालात में तो अहमदियों को ख़ास तौर पर तमाम रंजिशें दूर करके एक हसीन मुआशरे की बुनियाद रखनी चाहिए ताकि मुख़ालिफ़ किसी तरह भी हमारी सफ़ों को तोड़ न सकें। अगर हम में तक़्वा पैदा होगा, तभी हम अल्लाह तआला का क़ुर्ब पाने वाले होंगे। क़ुर्बानी न करके भी हम क़ुर्बानी करने वाले होंगे।

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो जमाअत बनाई थी, उनमें से हर एक ज़की-नफ़्स (पवित्र आत्मा) था और हर एक ने अपनी जान को दीन पर क़ुर्बान किया हुआ था। उनमें से एक भी ऐसा न था जो मुनाफ़िक़ाना ज़िंदगी रखता हो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अल्लाह करे कि हमारी ईद महज़ दिखावे की ईद न हो, बल्कि हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल-इबाद की अदायगी की ईद हो। हम उसके फ़ज़्लों को हासिल करने वाले बनते चले जाएँ। दुआएँ भी करें और दुआओं में शुहदा के बच्चों को भी याद रखें जिन्होंने क़ुर्बानियाँ की हैं। अल्लाह तआला उन्हें और उनकी नस्लों को अपनी हिफ़ाज़त में रखे। क़ैदियों के लिए भी दुआ करें। पाकिस्तान में जहाँ ख़ास तौर पर क़ानून में बहुत-सारी पाबंदियाँ लगाई गई हैं — दुआ करें कि अल्लाह तआला यह पाबंदियाँ भी दूर करे और हमें हक़ीक़त में खुलकर इबादत का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। सब रुकावटें दूर हों, आज़ादी से जानवरों की क़ुर्बानियाँ भी कर सकें। अल्लाह तआला हमें वो सूझ-बूझ अता फ़रमाए कि हम इन क़ुर्बानियों की रूह को समझने वाले हों।

ख़ुतबे के आख़िर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इसके साथ ही मैं ख़ुतबा सुनने वाले तमाम लोगों को, यहाँ बैठे हुए सब को **ईद मुबारक** भी कहता हूँ। अल्लाह तआला इस ईद को बाबरकत फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ
فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ
یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ
یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है,
अनुवादक– तनवीर अहमद मालिक 9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब – 18001032131